

भारतीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों की भूमिका एक अध्ययन

डॉ मंजू लता शर्मा

व्याख्याता राजनीति विज्ञान राजकीय महाविद्यालय निवाई।

सार

भारतीय लोकतंत्र में क्षेत्रीय दलों का उदय पिछले तीन दशकों में विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा है। इन दलों ने केवल राष्ट्रीय राजनीति को प्रभावित नहीं किया है बल्कि राज्य स्तर पर नीति निर्माण, सामाजिक समानता और आर्थिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह शोधपत्र क्षेत्रीय दलों के उद्भव, उनकी राजनीतिक भूमिका गठबंधन राजनीति में योगदान और राज्य तथा केंद्र स्तर पर उनके प्रभाव का अध्ययन करता है। अध्ययन में यह भी देखा गया है कि कैसे क्षेत्रीय दलों ने सामाजिक आर्थिक और जातीय राजनीति को आकार दिया है और बहुदलीय लोकतंत्र में उनकी सुदृढ़ता सुनिश्चित की है। इस शोध का उद्देश्य भारतीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों के महत्व और उनके प्रभाव को व्यवस्थित रूप से विश्लेषित करना है।

परिचय

स्वतंत्रता के बाद भारत में कांग्रेस एक प्रमुख पार्टी थी इसके प्रमुख नेता विदेशों में शिक्षित थे और अंग्रेजी रहन-सहन और अधिकारों के बारे में जानते थे। इस लिए वे भारत में वैसे ही अधिकार और लोगों को समान अवसर देने के लिए प्रतिबद्ध थे। इसके राह में बाधा आने पर वे स्वयं अपनी पार्टी यानी कांग्रेस के खिलाफ ही मोर्चा खोल देते थे और अपनी बातों को सरकार के सामने रखते थे। सरकार इनकी बातों को सुनती थी और नीतियों में बदलाव भी करती थी। इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि विपक्ष के न होने पर भी ये लोग सकारात्मक विपक्ष की भूमिका निभाते थे। जब सन 1967 में कांग्रेस की 8 राज्यों में सरकार को बहुमत नहीं मिला तब कांग्रेस पार्टी से निकले हुए लोगों ने ही 6 राज्यों के मुख्यमंत्री का पदभार संभाला। कांग्रेस को अंबेला पार्टी की संज्ञा दी जाती है क्योंकि कांग्रेस पार्टी से ही अलग होकर कई राजनीतिक दल बने हैं जैसे तृणमूल कांग्रेस, एनसीपी इत्यादि भारत में दलों को राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय दलों में विभाजित किया गया है। कौन सी पार्टी राष्ट्रीय पार्टी है और कौन सी राज्य पार्टी इसके लिए पार्टियों को निश्चित संख्या में सीटें प्राप्त करनी होती हैं। निर्वाचन आयोग इसके बाद उन्हें राष्ट्रीय और राज्य पार्टी का दर्जा देता है। राष्ट्रीय पार्टियों को कई अतिरिक्त लाभ मिलते हैं, जैसे उन्हें अधिक स्टार प्रचारक रखने की अनुमति होती है। उन्हें प्रचार के लिए अधिक धन खर्च करने की अनुमति होती है। इसी प्रकार सरकारी चैनल पर अपनी बात रखने के लिए निश्चित समय मिलता है जिससे वह अपनी बात जनता तक पहुंचा सकते हैं।

वर्तमान समय में भारत में 6 राष्ट्रीय पार्टियां हैं। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, भारतीय जनता पार्टी, बहुजन समाज पार्टी, आम आदमी पार्टी, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी, नेशनल पीपुल्स पार्टी। राज्य मान्यता प्राप्त दल 47 है पंजीकृत गैर मान्यता प्राप्त दल 1593 हैं। इस प्रकार भारत में काफी अधिक संख्या में राजनीतिक दल भाग लेते हैं। किसी प्रकार का विवाद होने पर जैसे चुनाव चिन्ह आचार संहिता की उल्लंघन के मामले निर्वाचन आयोग देखता है।

भारत में प्रमुख क्षेत्रीय दलों का स्वरूप

भारत में मुख्य रूप से तीन प्रकार के राज्य स्तरीय दल पाए जाते हैं पहले प्रकार के राज्य स्तरीय दल वे हैं जो वास्तव में जाति, धर्म, क्षेत्र अथवा सामुदायिक हितों का प्रतिनिधित्व करते हैं और उन पर आधारित है। इसके उदाहरण अकाली दल (पंजाब) शिवसेना (महाराष्ट्र) अन्नाद्रमुक (तमिलनाडु) नेशनल कांग्रेस (जम्मू कश्मीर) मिजो नेशनल फ्रंट आदि।

दूसरे प्रकार के वे दल हैं जो विचारधारा तथा लक्ष्यों के आधार पर तो राष्ट्रीय दल हैं परंतु उनका समर्थन केवल कुछ लक्ष्यों तथा कुछ मामलों में कुछ क्षेत्र तक ही सीमित है। जैसे मुस्लिम लीग तथा क्रांतिकारी सोशलिस्ट पार्टी इत्यादि।

तीसरी प्रकार के राज्य दल हैं जो किसी समस्या विशेष को लेकर अथवा सदस्यों की छुब्धता को लेकर राष्ट्रीय दलों विशेष रूप से कांग्रेस से अलग होकर बने हैं इनमें से अधिकतर दल कुछ समय के लिए राष्ट्रीय दल रहे हैं उदाहरण केरल कांग्रेस, भारतीय क्रांति दल इत्यादि।

क्षेत्रीय दल

भारत में राजनीतिक व्यवस्था की एक महत्वपूर्ण विशेषता है बड़ी संख्या में क्षेत्रीय दलों की उपस्थिति जो विभिन्न स्तरों स्थानीय राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। किसी भी संघात्मक व्यवस्था में क्षेत्रीय दलों का उदय एक सकारात्मक परिघटना है। स्वतंत्रता से 1967 तक यह काम केवल कांग्रेस पार्टी करती थी लेकिन 1967 के पश्चात क्षेत्रीय दलों ने अपने क्षेत्रीय मुद्दे सरकार के सामने रखने लगे अपनी क्षमता के साथ उत्तरदायित्व का भी परिचय देते हैं। क्षेत्रीय पार्टियां एक क्षेत्रीय महत्व की पार्टियां होती हैं और एक क्षेत्र विशेष तक ही इनका प्रभाव रहता है। यह जातीय, सांस्कृतिक और भाषाई आधार पर क्षेत्रीय हितों के लिए काम करती हैं। यह अपने राज्य को राज्य के लोगों के लिए समर्पित करने की मांग करती हैं जैसे मुंबई में धरतीपुत्र की अवधारणा का विकास हुआ। जिसमें वहां रोजगार केवल मुंबई वालों के लिए आरक्षित करने की मांग की गई और दूसरे राज्यों के लोगों जैसे यूपी, बिहार के लोगों को प्रताड़ित कर भागने का प्रयास किया गया। वे केंद्र में अपने बल पर सरकार बनाने में असमर्थ होती हैं। हालांकि गठबंधन की सरकार बनने पर क्षेत्रीय पार्टियों का महत्व बढ़ जाता है। और वे अधिक मामलों में दबाव डालकर अपने क्षेत्र के पक्ष में निर्णय लेने के लिए विवश कर लेती हैं। क्षेत्रीय राजनीतिक दल और गठबंधन की राजनीति ने राजनीति के अपराधीकरण को भी तेज किया है। क्षेत्रीय राजनीतिक पार्टियों की संख्या बढ़ने से अपराधिक रिकॉर्ड वाले लोगों के चुनावी राजनीति में उनके जरिए प्रतिनिधि संस्थानों में प्रवेश की समस्या बहुत बढ़ गई है। गठबंधन की राजनीति ने राजनीतिक व्यवस्था की साख को दाव पर लगाकर उन्हें राष्ट्रीय स्तर की पहचान दी है। आज कई ऐसे क्षेत्रीय नेता हैं जो आपराधिक छवि के हैं। जो राष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। क्षेत्रीय पार्टियां अपने समर्थन के बदले भ्रष्टाचार और अपनी संकीर्ण क्षेत्रीय हितों के लिए काम करती हैं।

भारत की राजनीति

“भारत की राजनीति देश के संविधान के दायरे में काम करती है। भारत एक संसदीय धर्मनिरपेक्ष लोकतांत्रिक गणराज्य है जिसमें भारत के राष्ट्रपति राज्य के प्रमुख और भारत के प्रथम नागरिक हैं और भारत के प्रधानमंत्री सरकार के प्रमुख हैं। यह सरकार के संघीय ढांचे पर आधारित है, हालांकि इस शब्द का उपयोग संविधान में ही नहीं किया गया है। भारत दोहरी राजनीति प्रणाली का पालन करता है, प्रकृति में संघीय, जिसमें केंद्र में केंद्रीय प्राधिकरण और परिधि में राज्य शामिल होते हैं। संविधान केंद्र और राज्य दोनों सरकारों की संगठनात्मक शक्तियों और सीमाओं को परिभाषित करता है; यह अच्छी तरह से मान्यता प्राप्त है, तरल (संविधान की प्रस्तावना कठोर है

और संविधान में आगे संशोधनों को निर्देशित करने के लिए) और सर्वोच्च माना जाता है,। राष्ट्र के कानूनों को इसके अनुरूप होना चाहिए। एक द्विसदनीय विधानमंडल का प्रावधान है जिसमें एक ऊपरी सदन, राज्यसभा (राज्यों की परिषद) जो भारतीय संघ के राज्यों का प्रतिनिधित्व करती है, और एक निचला सदन, लोकसभा (लोगों का सदन) जो समग्र रूप से भारत के लोगों का प्रतिनिधित्व करता है। ”

भारतीय लोकतंत्र में राजनीतिक दलों की भूमिका

भारत का राजनीतिक परिदृश्य एक जीवंत बहुदलीय प्रणाली की विशेषता है, जो इसके विविध भौगोलिक, सामाजिक और सांस्कृतिक ताने-बाने का प्रतिबिंब है। समय के साथ, राष्ट्रीय और क्षेत्रीय राजनीतिक दल देश के लोकतांत्रिक ढाँचे के अभिन्न अंगों के रूप में विकसित हुए हैं। जबकि कई दलों के प्रभाव पर बहस जारी है, संसदीय लोकतंत्र के भीतर उनकी भूमिकाओं को समझना महत्वपूर्ण है। प्रत्येक राजनीतिक दल अपनी अनूठी दृष्टि और विचारधारा लाता है, जो अक्सर उस राज्य या क्षेत्र की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप होती है जिसका वह प्रतिनिधित्व करता है। चुनावी समर्थन पर, ये दल भारत की कार्यकारी और विधायी दोनों शाखाओं को नियंत्रित करने की शक्ति रखने वाले वैध शासकों की कमान संभालते हैं।

“राष्ट्र की सेवा के व्यापक लक्ष्य के अलावा, राजनीतिक दल छोटे उद्देश्यों को अपनाते हैं जो सामाजिक कल्याण में योगदान करते हैं। इसमें राजनीतिक और सामाजिक चेतना को बढ़ावा देना, सार्वजनिक चिंताओं को कम करना, सामाजिक संकेतकों का पक्ष लेना और भ्रष्टाचार का मुकाबला करना शामिल है। गठबंधन सरकारों के उदाहरणों में, राष्ट्रीय और क्षेत्रीय दल सहयोग करते हैं, नागरिकों को राष्ट्रीय स्तर पर अपने विचार व्यक्त करने के लिए एक एकीकृत मंच प्रदान करते हैं। वे शासन के उच्चतम स्तरों पर विविध हितों का प्रतिनिधित्व करने वाले लोगों की सामूहिक आवाज बन जाते हैं।

उद्देश्य

1. भारतीय दल प्रणाली की विशिष्ट विशेषताओं को समझते हुए पार्टी प्रणाली के विभिन्न चरणों का अध्ययन करना।
2. विभिन्न राजनीतिक सिद्धांतों के परिप्रेक्ष्य में क्षेत्रीय और राज्य आधारित दलों की उत्पत्ति और विकास का विश्लेषण करना।

अध्ययन का कार्यक्षेत्र

इस अध्ययन का उद्देश्य एकल सैद्धांतिक ढाँचे के संदर्भ में राजनीतिक दलों की उत्पत्ति और विस्तार का पता लगाना कठिन है क्योंकि विभिन्न राजनीतिक व्यवस्थाओं में असमान राजनीतिक व्यवस्थाएँ होती हैं और उनके अपने राजनीतिक विकास होते हैं। राजनीतिक दलों की उत्पत्ति का अध्ययन करने के लिए कई विद्वानों के प्रयास हुए हैं, जो राजनीतिक दल के विकास को ज्यादातर पश्चिमी लोकतांत्रिक व्यवस्था से संबंधित देखते हैं। मौरिस डुवर्गर राजनीतिक दलों के उद्भव और निर्माण को दो श्रेणियों में वर्गीकृत करते हैं- पार्टियों का चुनावी और संसदीय मूल। बाहरी रूप से सृजित पार्टियाँ वे हैं जो विधायिका के बाहर उभरती हैं और लगातार शासक समूह को चुनौती देती हैं और प्रतिनिधित्व की मांग करती हैं।

भारतीय राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में, औपनिवेशिक शासन की विरासत के रूप में एक लंबे आंदोलन और राजनीतिक संस्थानों के बाद भारत को आजादी मिली। भारतीय संविधान एक लोकतांत्रिक, संसदीय, संघीय और धर्मनिरपेक्ष गणराज्य की नींव रखता है। प्रारंभ में, भारत में एकल-दलीय प्रभुत्व प्रणाली या कांग्रेस प्रणाली होती है। कांग्रेस पार्टी अपने शुरुआती दौर में राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व करती है और 1952 से 1967 तक पहले चार संसदीय चुनावों के दौरान देश की अग्रणी पार्टी में बदल जाती है। 1967 में हुए संसदीय चुनाव तेजी से प्रतिस्पर्धी राजनीति और पार्टी प्रतिस्पर्धा की दिशा में एक प्रमुख कदम का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो मुख्य रूप से राज्य स्तर पर होता है। 1977 में पहली गठबंधन सरकार बनने तक राष्ट्रीय राजनीति में कांग्रेस का दबदबा बना रहता है। 1989 में क्षेत्रीय दल राष्ट्रीय स्तर पर अपनी वृद्धि दर्ज करते हैं।

डेटा विश्लेषण

राष्ट्रीय स्तर पर गठबंधन सरकारों में क्षेत्रीय दलों की भूमिका

1989 के बाद से गठबंधन सरकारों में क्षेत्रीय दलों की भूमिका का अध्ययन निम्नलिखित तालिका में दिखाया गया है:

क्षेत्रीय दलों का योगदान

1989 के बाद से गठबंधन सरकारों में क्षेत्रीय दलों की भूमिका का विश्लेषण महत्वपूर्ण है। 1989 में एनडीए (राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन) सरकार में अकाली दल और शिवसेना जैसे क्षेत्रीय दलों ने गठबंधन की मजबूती और स्थिरता में महत्वपूर्ण योगदान दिया। 2004 में यूपीए (संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन) सरकार में डीएमके और एनसीपी जैसे क्षेत्रीय दलों ने राष्ट्रीय मुद्दों पर महत्वपूर्ण समर्थन प्रदान किया। 2014 में एनडीए सरकार में टीडीपी और शिवसेना ने राष्ट्रीय स्तर पर समर्थन और गठबंधन की भूमिका निभाई।

क्षेत्रीय दलों ने गठबंधन सरकारों के निर्माण और स्थिरता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने राष्ट्रीय राजनीति में महत्वपूर्ण मुद्दों पर समर्थन दिया और विभिन्न समयों में सरकारों को स्थिरता प्रदान की। यह गठबंधन राजनीति का एक महत्वपूर्ण पहलू है, जहां क्षेत्रीय दलों ने राष्ट्रीय मुद्दों पर अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

तालिका 1: भारतीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों की केंद्रीय गठबंधन सरकारों में भूमिका

वर्ष	गठबंधन सरकार	प्रमुख क्षेत्रीय दल	भूमिका
1989	एनडीए	अकाली दल, शिवसेना	गठबंधन की मजबूती और स्थिरता
2004	यूपीए	डीएमके, एनसीपी	राष्ट्रीय मुद्दों पर महत्वपूर्ण समर्थन
2014	एनडीए	टीडीपी, शिवसेना	राष्ट्रीय स्तर पर समर्थन और गठबंधन

क्षेत्रीय और राज्य दलों की घटती भूमिका

चुनावों के बाद क्षेत्रीय और राज्यीय दलों की भूमिका का विश्लेषण निम्नलिखित तालिका में प्रस्तुत किया गया है:

चुनावी परिणामों का विश्लेषण

2014 के आम चुनावों के बाद क्षेत्रीय और राज्यीय दलों की भूमिका में कमी आई है। 2014 के चुनावों में भाजपा का प्रभुत्व बढ़ा और राष्ट्रीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों की भूमिका सीमित हो गई। यह बदलाव भारतीय दल प्रणाली में नए परिवर्तनों को दर्शाता है, जहां राष्ट्रीय दलों का वर्चस्व बढ़ा और क्षेत्रीय दलों की भूमिका सीमित हो गई।

2014 और 2019 के चुनावों में भाजपा ने अपनी स्थिति मजबूत की और क्षेत्रीय दलों की भूमिका को कम कर दिया। यह परिवर्तन राष्ट्रीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों की प्रभावशीलता को कम करता है और राष्ट्रीय दलों के प्रभुत्व को बढ़ाता है। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि राष्ट्रीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों की भूमिका सीमित हो गई है और राष्ट्रीय दलों का प्रभुत्व बढ़ा है।

तालिका 2: 2014 और 2019 में भारतीय आम चुनावों में प्रमुख क्षेत्रीय दलों का चुनावी प्रदर्शन

दल का नाम	2014 सीटें	2019 सीटें	परिवर्तन (%)
तृणमूल कांग्रेस	34	22	-35.29%
समाजवादी पार्टी	5	3	-40.00%
बीजू जनता दल	20	12	-40.00%

2014 के आम चुनावों के बाद क्षेत्रीय और राज्यीय दलों की भूमिका का विश्लेषण निम्नलिखित तालिका में प्रस्तुत किया गया है:

तालिका 3: भारतीय राजनीति में राज्यीय दलों की भूमिका का विश्लेषण

वर्ष	चुनाव परिणाम	राष्ट्रीय दल	क्षेत्रीय दल	क्षेत्रीय दलों की भूमिका
2014	भाजपा का प्रभुत्व	भाजपा	निचली भूमिका	राष्ट्रीय राजनीति पर सीमित प्रभाव
2019	भाजपा की वापसी	भाजपा	निचली भूमिका	राष्ट्रीय स्तर पर प्रभावहीन

परिणामों का विवरण और व्याख्या

इस अध्ययन के आधार पर भारतीय दल प्रणाली की विशेषताएँ स्पष्ट रूप से सामने आती हैं। भारतीय दल प्रणाली का विकास विभिन्न चरणों में हुआ है, जिसमें प्रमुख रूप से कांग्रेस पार्टी का प्रभुत्व, प्रतिस्पर्धी राजनीति का उदय और क्षेत्रीय दलों का महत्वपूर्ण उदय शामिल है। 1952 से 1967 तक कांग्रेस पार्टी ने अपने संगठनात्मक ढांचे और स्वतंत्रता संग्राम की विरासत के बल पर राष्ट्रीय राजनीति में वर्चस्व बनाए रखा। इस अवधि में विपक्ष कमजोर था और कांग्रेस का मुकाबला करने में असमर्थ रहा। 1967 के बाद भारतीय राजनीति में बदलाव आया जब विभिन्न राज्यों में क्षेत्रीय दलों का उदय हुआ। विपक्षी दलों ने कांग्रेस के खिलाफ अपनी स्थिति मजबूत की और प्रतिस्पर्धी राजनीति का प्रारंभ हुआ। यह अवधि 1989 तक चली, जब राज्य स्तर पर क्षेत्रीय दलों की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो गई और कांग्रेस का प्रभाव धीरे-धीरे कम हुआ। 1989 के बाद राष्ट्रीय राजनीति में गठबंधन सरकारों का दौर शुरू

हुआ, जिसमें क्षेत्रीय दलों की भूमिका निर्णायक रही। तमिलनाडु में डीएमके (1949), महाराष्ट्र में शिवसेना (1966), पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस (1998), और उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी (1992) तथा बहुजन समाज पार्टी (1984) जैसे दल राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर सक्रिय हुए। इन दलों ने भाषा, संस्कृति, जातीय और सामाजिक न्याय जैसे मुद्दों के माध्यम से अपनी पहचान बनाई।

गठबंधन सरकारों में क्षेत्रीय दलों ने एनडीए और यूपीए के निर्माण और स्थिरता में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उदाहरण के लिए, 1989 में एनडीए में अकाली दल और शिवसेना, 2004 में यूपीए में डीएमके और एनसीपी, तथा 2014 में एनडीए में टीडीपी और शिवसेना ने राष्ट्रीय मुद्दों पर समर्थन प्रदान किया। हालांकि, 2014 और 2019 के आम चुनावों में भाजपा के बढ़ते प्रभुत्व के कारण राष्ट्रीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों की भूमिका सीमित हो गई। इससे यह स्पष्ट होता है कि भारतीय दल प्रणाली में राष्ट्रीय दलों का वर्चस्व बढ़ा है, जबकि क्षेत्रीय दलों की भूमिका कुछ हद तक कम हुई है। इस अध्ययन से भारतीय राजनीति में दल प्रणाली के विकास और क्षेत्रीय दलों की गतिशीलता को समझने में महत्वपूर्ण योगदान मिलता है।

भारत में क्षेत्रीय राजनीतिक पार्टियों का उदय

भारतीय राजनीति में क्षेत्रीय राजनीतिक पार्टियों का उदय और विकास अत्यंत महत्वपूर्ण है। विभिन्न राज्यों में इन पार्टियों की स्थापना और उनके प्रमुख लक्षण यह दर्शाते हैं कि स्थानीय मुद्दों और सांस्कृतिक विविधताओं का राजनीति पर गहरा प्रभाव है। क्षेत्रीय दल केवल राज्य स्तर तक सीमित नहीं रहते, बल्कि वे राष्ट्रीय राजनीति और नीति निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

भारत में क्षेत्रीय दलों के उदय के पीछे कई कारण हैं। सबसे प्रमुख कारण भू-भौतिक विविधता है। अलग-अलग राज्यों की भौगोलिक, सांस्कृतिक और भौतिक संरचनाओं ने विशेष स्थानीयताओं, भाषाओं और परंपराओं का विकास किया, जिसने क्षेत्रीय दलों के गठन को प्रोत्साहित किया। भाषा और सांस्कृतिक अंतर ने स्थानीय राजनीतिक मंच की आवश्यकता को और बढ़ाया। स्थानीय मुद्दे भी क्षेत्रीय दलों के उदय में निर्णायक रहे हैं। जल, ऊर्जा, कृषि और ग्रामीण विकास जैसे क्षेत्रीय मुद्दों ने लोगों को केंद्रित राजनीतिक प्रतिनिधित्व की ओर प्रेरित किया। इसके अलावा, सामाजिक और आर्थिक असमानता ने स्थानीय दलों की भूमिका को और महत्वपूर्ण बनाया।

कास्ट और जाति आधारित राजनीति ने भी क्षेत्रीय दलों के गठन को बढ़ावा दिया। विशेष सामाजिक समूहों और पिछड़े वर्गों के अधिकारों और प्रतिनिधित्व की आवश्यकता ने नए दलों को उत्पन्न किया। कुछ क्षेत्रों में मजबूत आर्थिक आधार ने भी स्थानीय दलों को नीतिगत और आर्थिक मुद्दों पर प्रभावशाली भूमिका निभाने का अवसर दिया। समय के साथ, नए राजनीतिक दल लगातार उभर रहे हैं, जो स्थानीय मुद्दों और समुदायों की समस्याओं पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। इनमें से कई दल राज्य स्तर पर प्रभावशाली हैं और कुछ राष्ट्रीय राजनीति में भी पहचान बना रहे हैं। इस प्रकार, क्षेत्रीय दल भारतीय लोकतंत्र में बहुलता और प्रतिनिधित्व की मजबूती प्रदान करते हुए स्थानीय से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक प्रभावी योगदान दे रहे हैं।

निष्कर्ष

भारतीय राजनीति में पार्टी प्रणाली का विकास और इसके विभिन्न चरणों का विश्लेषण भारतीय लोकतंत्र की जटिलता और विविधता को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। इस अध्ययन ने यह स्पष्ट किया है कि भारतीय दल प्रणाली ने कैसे अलग-अलग ऐतिहासिक युगों में विभिन्न प्रकार की राजनीतिक गतिशीलताओं और चुनौतियों का सामना किया है, और

किस प्रकार विभिन्न राजनीतिक दलों ने भारतीय राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाई हैं। इस निष्कर्ष में हम विभिन्न कालखंडों के माध्यम से भारतीय पार्टी प्रणाली के विकास को विस्तार से समझेंगे। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद, भारतीय राजनीति में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) का एकाधिकार स्थापित हो गया था। कांग्रेस ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान प्राप्त लोकप्रियता और संगठनात्मक ताकत के आधार पर पहले चार आम चुनावों में शानदार जीत हासिल की। यह स्थिति उस समय के विपक्षी दलों की कमजोर स्थिति और राजनीतिक संगठन की कमी के कारण मजबूत थी। कांग्रेस ने केंद्र में बल्कि विभिन्न राज्यों में भी अपनी राजनीतिक पकड़ मजबूत की, जिससे एक केंद्रीकृत प्रणाली का निर्माण हुआ।

संदर्भ:

1. चंद्रा, के. (2004). जातीय दल क्यों सफल होते हैं: भारत में संरक्षण और जातीय जनसंख्या। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
2. यादव, वाई. (1999)। परिवर्तन के दौर में चुनावी राजनीति: भारत की तीसरी चुनावी प्रणाली, 1989-1999। इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 34(34), 2393–2399।
3. जाफरलॉट, सी. (2003)। भारत की मौन क्रांति: उत्तर भारत में निचली जातियों का उदय। कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस।
4. पलशीकर, एस., और कुमार, एस. (2004)। भारतीय राज्यों में दलीय प्रणाली और चुनावी राजनीति, 1990-2004। इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 39(48), 5109–5117।
5. हीथ, ओ., और यादव, वाई. (2019)। भारत में कांग्रेस पार्टी: चुनावी गिरावट, संगठनात्मक ठहराव और 2019 का आम चुनाव। एशियन सर्वे, 59(6), 1070–1092।
6. भारत का चुनाव आयोग। (2024)। आम चुनावों पर सांख्यिकीय रिपोर्ट। <https://eci.gov.in> से प्राप्त।
7. पर्ई, एस. (2019)। भारत में क्षेत्रीय दल और राष्ट्रीय राजनीति। जर्नल ऑफ साउथ एशियन स्टडीज, 42(2), 145–162।
8. पालमर, नॉर्मन डी.। “भारत के चौथे सामान्य चुनाव,” एशियन सर्वे 7, नं. 5 (मई 1967): 275-291।
9. पालशिकर, सुहास और यादव, योगेंद्र। “फॉर्चुना और विर्चू के बीच: 2009 में कांग्रेस की अस्पष्ट विजय की व्याख्या,” इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली 44, नं. 39 (2009): 33-46।
10. पालशिकर, सुहास। “शिवसेना: कई चेहरों वाला एक बाघ?” इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली 39, नं. 14/15 (2004): 1497-1507।
11. रामानी, श्रीनिवासन। “एक निर्णायक जनादेश,” इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 44, नं. 21 (2009): 11-12।

12. रॉय, ए. के.। “हंग या हैंग्ड? ग्यारहवीं लोक सभा की स्थिति,” इकनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली 31, नं. 28 (13 जुलाई 1996): 1826-1827।